लोकतंत्र में अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा आवश्यक : महाश्रमण

आमेटः 27 जनवरी

आचार्य महाश्रमण ने भारत सरीखे लोकतांत्रिक देश में अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा को आवश्यक बताते हुए कहा कि इसके अभाव में अच्छे प्रजातंत्र का सपना साकार करने में कठिनाईयां उत्पन्न हो सकती है और लोकतंत्र आहत होता है। अनुशासन और काम के प्रति जिम्मेदारी के बिना अनेक समस्याएं खडी होने की संभावना बढ जाती है। कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता विनाश को प्राप्त हो जाता है। इसलिए जब अनुशासन भंग हो तो उस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यह उद्‌गार उन्होंने 26 जनवरी को यहां अहिंसा समवसरण में प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि केवल प्रजातंत्र ही नहीं वरन् सामाजिक संगठनों में भी अनुशासन रखना वांछनीय होता है। अनुशासन की रूपरेखा नहीं बनेगी तो संगठन का ढांचा धराशायी हो सकता है। तेरापंथ में भी इस बात पर विशेष जोर दिया गया हैं कि अनुशासन और मर्यादाओं की पालना में कडे कदम उठाएं जाएं। यही बात परिवार पर भी लागू होती है। घर में इन बातों का पालन नहीं होगा तो प्रतिष्ठा धूमिल होने का खतरा बढ जाता है। हमारे दे-ा में जहां संविधान की पालना के लिए गणतंत्र दिवस मनाया जाता है उसी तरह तेरापंथ धर्म संघ में मर्यादा महोत्सव मनाने की परपंरा है। इसमें भी अनु-ाासन पर ही वि-ोश ध्यान दिया जाता है। गणतंत्र एक दिन जबकि मर्यादा महोत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में कर्तव्यनिष्ठता और अनुशासन प्रशिक्षण नहीं दिया जाएगा तो लोकतंत्र का देवता आहत होगा। यह लोकतंत्र ही है जहां जनता के द्वारा जनता के लिए जनता का शासन होता है।

आचार्यश्री ने कहा कि भारत का विकास हुआ है, लेकिन अधूरे विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक और भौतिक विकास हो रहा है। इस विकास की जनता कामना करती है। आर्थिक और भौतिक विकास विकास ही है, परन्तु इसके साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। दे-ा में अनेक महापुरुशों ने जन्म लिया। कई साधु-संतों, महातपस्वी व साध्वियां तपस्यारत रही है। आचार्य तुलसी ने भी इसी भूमि पर जन्म लिया। गुरुदेव ने देश में चरित्र निर्माण के लिए सबका ध्यान आत्कृष्ट करने के लिए अणुव्रत आंदोलन से देशभर में लंबी पदयात्राएं की और नैतिकता का संदेश आमजन को देने का प्रयास किया। अभी अहिंसा यात्रा चल रही है। इसका उद्‌दे-य भी नैतिकता का संदे-ा आमजन तक पहुंचाना ही है।

भ्रष्टाचार देश के लिए अच्छी बात नहीं

मेवाडी घाटियों में पदयात्रा कर ईमानदारी का संदे-ा देने वाले :ांतिदूत ने कहा कि देश में जिस तरह से भ्रष्टाचार फैला है। यह अच्छा नहीं है। भ्रष्टाचार केवल राजनेताओं में है यह नहीं है। इससे जनता भी अछूती नहीं है। जिसे जितना अवसर मिलता है उतना वह भ्रष्टाचार करने से नहीं चुकता है, जिस देश से दूसरे मुल्क चरित्र की शिक्षा लेते थे। सीख लेते थे। आज उसी देश में चरित्र हनन हो रहा है। भ्रष्टाचार

शिष्टाचार बन रहा है। आज आवश्यक है नैतिकता, प्रामाणिकता के प्रति निष्ठा जगे। जब ईमानदारी के प्रति आस्था होगी तो छोटे मोटे आकर्षण के प्रति मन विचलित नहीं होगा।

अणुव्रत एक तत्व

आचार्यश्री ने अणुव्रत को एक तत्व के रुप में परिभाशित करते हुए कहा कि यह दुःखी प्राणी को :ारण देने वाला है। हमारे मुख्य कार्यक्रमों में महाव्रत और दूसरा अणुव्रत। महाव्रत के मद्देनजर आचार्यश्री तुलसी की जन्म :ताब्दी तक एक सौ ऐसे युवक-युवतियां हो, जो दीक्षा लेने की इच्छा रखते हो तो :ताब्दी वर्श को सफल मान लूंगा। दूसरा है अणुव्रत। इसके माध्यम से हम दे-ा को अहिंसा और भ्रश्टाचार से मुक्त करने की दि-ाा में प्रयास करें। उन्होंने अभाव को अपराध का कारण बताते हुए कहा कि इससे भी बडा कारण है आवे-ा में आकर अपनापन भूल जाना। पिता-पुत्र, पति-पत्नी आदि से झगडा करना और हत्या करना भी आवे-ा की ही परिणति है। प्रेक्षाध्यान में उल्लेख मिलता है कि अज्ञानी व्यक्ति हिंसा में जा सकता है। काम और क्रोध की वृति से भी व्यक्ति में हिंसा का प्रादुर्भाव होता है।

आमेट में मर्यादा महोत्सव आज से, तैयारियां पूरी

विद्यालय मैदान पर होंगे त्रिदिवसीय कार्यक्रम, सैंकडों साधु-साध्वियां और हजारों श्रद्धालु भाग लेंगे

आमेटः 27 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में बहुप्रतीक्षित मर्यादा महोत्सव का आगाज :ानिवार को दोपहर सवा बारह बजे आमेट नगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मैदान में होगा। तीन दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में दे-ाभर से समागत होने वाले हजारों श्रावक-श्राविकाओं के बैठने को लेकर व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों ने तैयारियों को अंतिम रुप दिया।

आमेट मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष धर्मचंद खाब्या ने बताया कि महोत्सव के पहले दिन :ानिवार को दोपहर आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव के :ाुभारंभ की घोशणा की जाएगी। इसके बाद संघ के समस्त साधु-साध्वियों की ओर से चाकरी के लिए विनम्र प्रार्थना आचार्यश्री से की जाएगी। आचार्यश्री सेवा की अभि-ांसा करने के बाद उद्देश्यों पर वि-ोश वक्तव्य देंगे, तत्प-चात् आचार्यश्री तेरापंथ के निर्धारित सेवा केन्द्रों पर साधु-साध्वियों के सिंघाडों की नियुक्तियां करेंगे।

खाब्या ने बताया कि महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को अमृत महोत्सव के तृतीय चरण का आयोजन होगा। इसमें वर्धापना का कार्यक्रम होगा। इसमें साधु-साध्वियों द्वारा रोचक प्रस्तुतियां दी जाएगी। इस दौरान महाराश्ट्र के पूर्व मंत्री सुरे-ा दादा जैन भी मौजूद रहेंगे। महोत्सव के अंतिम दिन 30 जनवरी को मुख्य समारोह आयोजित होगा। मर्यादा गीत और उद्घोशणा से कार्यक्रम का :ाुभारंभ होगा। इस दौरान अनेक

साधु-साध्वियां मर्यादा, व्यवस्था और अनु-ाासन से संबंधित वि-ोश वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। साथ ही मर्यादा पर आस्था प्रकट करने के गीतों की प्रस्तुति देंगे। आचार्यश्री महाश्रमण के नेतृत्व में साधु-साध्वियों की वृहद हाजिरी कार्यक्रम और आचार्यश्री भिक्षु व मर्यादा से संबंधित नव गीत की प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया कि इस दौरान आचार्यश्री महाश्रमण पूरे दे-ा में और महोत्सव में उपस्थित साधु-साध्वियों के आगामी चातुर्मासों की घोशणा करेंगे।

इसका फोटो आरकेबी 6965 के नाम से है।

कैप्-ान- संयम लाइफ फाउण्डे-ान का :ुभारंभ करते आचार्यश्री महाश्रमण

संयम लाइफ फाउण्डे-ान का :ुभारंभ

आमेटः 27 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने स्व. कंकूबाई फौजमल चौधरी की स्मृति में उनके परिजनों की ओर से समाज के हितार्थ :ुरु किए गए संयम लाइफ फाउण्डे-ान का गुरुवार को दैनिक प्रवचन के उपरांत विधिवत :ुभारंभ किया।
मैनेजिंग ट्रस्टी अर्जुनलाल चौधरी ने बताया कि अहिंसा और न-ाामुक्ति आंदोलन के प्रवर्तक तेरापंथ धर्म संघ के एकाद-ाम आचार्यश्री महाश्रमण, मंत्री मुनि सुमेरमल, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के मंगल आ-ाीर्वाद से स्व. कंकूबाई फौजमल चौधरी की स्मृति और आचार्य के 50 वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में यह फाउण्डे-ान संयमी जीवन जीने वाले मानव, समण-समणियां, भिन्न समाचारि व जैन समाज के लोगों के स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों के त्वरित निवारण के उद्दे-य से गठित किया गया है।

मर्यादा महोत्सव विशेष

आज्ञा-:ून्य संघ हाींयों का ढेर

- मुनि जयंत कुमार

आज का युग संगठन प्रधान है। संगठन वही चिरजीवी हो सकता है, जिसमें मर्यादाओं का निर्माण होता है और उनके पालन करने की भावना विकसित की जाती है। तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा की श्रृंखला में प्रतिश्ठित है। उसमें जो सबसे बड़ी वि-ोशता है वह है आज्ञा की। आज्ञा प्रधान संघ ही, संघ कहलाता है। आज्ञा--ाून्य संघ, संघ नही, सिर्फ हाींयों का ढेर है। तेरापंथ हाींयों के ढेर का संघ नहीं, विचारकों का संघ है। महामहिम आचार्यश्री भिक्षु ने संघ को आज्ञा प्रधान बनाया। वे महापुरुष थे। उन जैसे महापुरुष इस धरातल पर कभी-कभी ही अवतरित हुआ करतें हैं। उन्होने जो मर्यादायें निर्मित की उनमें परिवर्तन की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। मर्यादायें बनी, परिवर्तन नहीं किया गया, इस बात का गौरव नहीं, गौरव इस बात का है कि आज सैंकड़ों विधान-विशेषज्ञ मिलकर भी ऐसा विधान बनाने में अपने आप को असमर्थ महसूस करते हैं, जो चिरस्थाई बन सके।

1838 में माघ शुक्ला सातम् के दिन आचार्यश्री भिक्षु ने संघ विधान की रचना की और तात्कालिक उनके साथी साधुओं नें विधान के लिए स्वीकृति प्रदान की। मर्यादा मे संगठन होता है पर तेरापंथ की मर्यादा सिर्फ संगठन प्रदान नहीं, आचार प्रधान है। संगठन गौण और आचार प्रधान है। वह संगठन इतना मजबूत, चिरस्थाई और विशुद्ध नहीं होता जहां केवल संगठन को ही मुख्यता दी जाती है। आचार की सुव्यवस्थित श्रृंखला में जकड़ा रहने वाला संगठन ही वास्तव में मजबूत, दीर्घकालिक, विशुद्ध संगठन होता है। संगठन का आधार प्रेम और प्रेम का आधार विशुद्ध आचार। तेरापंथ में प्रेम और विशुद्ध आचार दोनों हैं और दोनों का ही मार्ग विशुद्ध अहिंसा का मार्ग है।

तेरापंथ के विधान में जो धारायें हैं, मर्यादाएं हैं ये हमारे संघ के उज्ज्वल भूत, उज्ज्वल वर्तमान, उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक है। इनके प्रति हमारी जितनी निष्ठा हो उतनी ही हमारे रम्य व विकसित जीवन की ये परिचायक हैं। ये मर्यादाएं हमारा जीवन हैं, सर्वस्व हैं, निधि है। इनके प्रति हमारी जो निष्ठा है, उसे हम सहस्रगुणी अधिक बढातें हुए इन्हें सदैव अस्खलित रुप से निभाते रहें।